Reg. No. MAHHIN / 2008 / 26222

ISSN-2250-2335

समीचीन

(साहित्य-समाज-संस्कृति और राजनीति के खुले मंच की अर्द्ध वार्षिक-अव्यावसायिक पत्रिका)

पीयर रिव्यूड व यू. जी. सी. केयर लिस्ट में सम्मिलित जर्नल

सिनेमा में राष्ट्रीयता और अस्मिता मूलक विमर्श पर केंद्रित अंक

ISSN-2250-2335 Reg. No. MAHHIN/2008/26222

समीचीन

(साहित्य-समाज-संस्कृति और राजनीति के खुले मंच की त्रैमासिक-अव्यावसायिक पत्रिका)

पीयर रिव्यूड व यू. जी. सी. केयर लिस्ट में सम्मिलित जर्नल

प्रबंध संपादिका :
डॉ. रोहिणी शिवबालन
प्रधान संपादक-प्रकाशक :
डॉ. देवेश ठाकुर
संपादक :
डॉ. सतीश पांडेय
संयुक्त संपादक :
डॉ. प्रवीण चंद्र बिष्ट
डिजिटल संपादक :
डॉ. मनीष कुमार मिश्रा

संपादकीय-संपर्क :
बी-23, हिमालय सोसाइटी,
असल्फा,
घाटकोपर (प.), मुंबई-400 084.

Email: sameecheen@gmail.com
website-www.http//:
sameecheen.com

विशेष :
'समीचीन' में प्रकाशित रचनाओं में व्यक्त विचार संबद्ध रचनाकारों के हैं। संपादक-प्रकाशक की उनसे सहमति आवश्यक नहीं है। सभी विवादों का न्याय-क्षेत्र मात्र मुंबई होगा। सभी पदाधिकारी पूर्णरूप से अवैतनिक।

परीक्षक विद्वत मंडल : (Peer Review Team)

1) डॉ. राम प्रसाद भट्ट
भारत-विद्या विभाग,
हैम्बर्ग विश्वविद्यालय, हैम्बर्ग, जर्मनी
2) प्रो. (डॉ.) देवेन्द्र चौबे
जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, नई दिल्ली
3) प्रो. (डॉ.) वशिष्ठ अनूप
हिन्दी विभाग, काशी हिंदू विवि.,
वाराणसी, (उ. प्र.)
4) डॉ. नरेन्द्र मिश्र
प्रो. हिंदी, मानविकी विद्यापीठ, इग्नू मैदानगढ़ी,
दिल्ली110068
5) प्रो. (डॉ.) करुणाशंकर उपाध्याय
प्रोफेसर, हिन्दी विभाग, मुंबई विश्वविद्यालय,
मुंबई
6) प्रो. (डॉ.)अनिल सिंह
अध्यक्ष, हिन्दी अध्ययन मंडल, मुंबई
विश्वविद्यालय, मुंबई
7) प्रो. (डॉ.) सदानंद भोसले
प्रोफेसर, हिन्दी विभाग, सवित्रीबाई फुले पुणे
विद्यापीठ, पुणे
8) प्रो. (डॉ.) शरेशचंद्र चुलकीमठ
पूर्व अध्यक्ष, हिन्दी विभाग, कर्नाटक
विश्वविद्यालय, धारवाड़
9) डॉ. अरुणा दुबलिश
पूर्व प्राचार्य, कनोहरलाल महिला स्नातकोत्तर
महाविद्यालय, मेरठ (उ. प्र.)

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक : देवेश ठाकुर ने प्रिंटोग्राफी सिस्टम (इंडिया) प्रा. लि., 13/डी, कुर्ला इंडस्ट्रियल एस्टेट, नारी सेवा सदन रोड, नारायण नगर, घाटकोपर (प.) मुंबई-400 086 में छपवाकर बी-23, हिमालय सोसाइटी, असल्फा, घाटकोपर (प.), मुंबई-400084 से प्रकाशित किया।

• वर्ष-16 • अंक 34 • जनवरी-मार्च-2023 • पूर्णांक 71 • मूल्य 100 रुपए
सहयोग : एक प्रति रु. 100/-, वार्षिक रु. 400/-, पंच वार्षिक रु. 2000/-

सीधे समीचीन के खाते में भेजने के लिए : खातेधारक का नाम : **समीचीन** / sameecheen
A/C No. 60330431138, Bank of Maharashtra,
Dr. Ambedkar Road, Dadar, Mumbai. IFSC : MAHB0000045

अनुक्रमणिका

1. अपने तई — 08
2. इक्कीसवीं सदी के हिंदी फिल्मी गीतों में राष्ट्रीय भावना
   प्रा. एस. के. आतार — 09-12
3. 21वीं सदी के राष्ट्रीय भावना के हिंदी फिल्मी
   गीत और आम आदमी - डॉ. सूरज बालासो चौगुले — 13-18
4. '२१वीं सदी के हिंदी काव्य में राष्ट्रीय भावना'
   डॉ. सविता लालासो नाईक-निंबाळकर — 19-21
5. कितने पाकिस्तान उपन्यास में राष्ट्रीयता-डॉ. शहनाज महेमूदशा सय्यद — 22-26
6. हिंदी दलित काव्य में राष्ट्रीय भावना-प्रा. मारुती दत्तात्रय नायकू — 27-34
7. हिंदी सिनेमा और राष्ट्रीय भावना-प्रा. डॉ. प्रकाश आठवले — 35-39
8. भूमंडलीकरण के चपेट में राष्ट्रीयता का चिराग : पॉल गोमरा
   डॉ. विकास विलासराव पाटील — 40-42
9. भारतीय राष्ट्रवाद की अवधारणाः'लगान' के जातीय समीकरण
   प्रा. डॉ. दीपक जाधव — 43-48
10. 'पं. प्रदीप के गीतों में राष्ट्रीय चेतना : पुष्पा भारती के संस्मरण के
    संदर्भ में' शोध निर्देशक - डॉ. महिपती जगन्नाथ शिवदास
    शोध छात्रा - रूपाली विट्ठल माने — 49-55
11. महावीर उत्तरांचली की 'प्रतिनिधि रचनाएं' संग्रह में चित्रित
    राष्ट्रीय चेतना - डॉ. हेमलता काटे — 56-61
12. '21 वी सदी के हिंदी सिनेमा में राष्ट्रीय भावना'- प्रा. डॉ. राठोड बाळु भोपू — 62-68
13. 21वीं सदी के हिंदी सिनेमा में राष्ट्रीय भावनाः 'टॉयलेट एक प्रेम कथा'
    के परिप्रेक्ष्य में' - प्रा. सागर रघुनाथ कांबळे — 69-72
14. नवजागरण की परम्परा और पुनरुत्थान का द्वन्द्व
    (डॉ. विकास गडकरी, डॉ. विनय तिवारी, डॉ. संतोष कोळेकर
    के संदर्भ में) - प्रा. सौ. शिल्पा शिंदे — 73-76
15. हिंदी फिल्मों में सामाजिक प्रश्नों द्वारा व्यक्त राष्ट्रीय भावना
    डॉ. सौ. वृषाली विकास मिणचेकर — 77-83
16. राष्ट्रीय चेतना से ओतप्रोत डॉ. कुमार विश्वास का काव्य-डॉ. नितीन धवडे — 84-87
17. 21वीं सदी के भीम गीतों में राष्ट्रीय भावना
    कु. शितल प्रल्हाद चव्हाण, शोधछात्र — 88-91
18. डॉ. परशुराम शुक्ल की बाल कविताओं में अभिव्यक्त राष्ट्रीय भावना
    डॉ. माधव राजप्पा मुंडकर — 92-97
19. '21वीं सदी के हिंदी उपन्यास और राष्ट्रीय एकता में बाधक तत्व'
    डॉ. नितीन विठ्ठल पाटील — 98-101
20. झारखण्ड की हस्तशिल्प-कलाओं में राष्ट्रीय भावना
    प्रमिला टोप्पो, शोधार्थी — 102-108
21. '21वीं सदी के हिंदी सिनेमा में राष्ट्रीय भावनाः 'न्यूटन' के परिप्रेक्ष्य में'
    डॉ. कृष्णात आनंदराव पाटील — 109-112
22. '२१वीं सदी के हिन्दी सिनेमा में राष्ट्रीय भावना'

भारतीय राष्ट्रवाद की अवधारणा: 'लगान' के जातीय समीकरण

प्रा. डॉ. दीपक जाधव

राष्ट्रवाद को विशिष्ट राजनीतिक विचारधारा के तहत एकांगी बनाने की कोशिश की जा रही है, जिसे 'लगान' नकारता है। 'लगान' की प्रतीकात्मक लड़ाई में भारत के सभी धर्म-समुदाय अपनी भूमिका अदा करते हैं और अंग्रेजी हुकूमत को चारों खाने चित कर देते हैं। भुवन-हिंदू है तो सोढ़ी सिख, इस्माइल मुसलमान, कचरा दलित, एलिजाबेथ ईसाई, गौरी-भारतीय नारी। यही हमने स्वतंत्रता आंदोलन में भी किया और सफलता अर्जित की। भारतीय राष्ट्रवाद की विशेषता है, 'विविधता में एकता'। यही हमारी ताकत है, जिसे लगान उजागर करता है। भारतीय राष्ट्रवाद अथवा भारतीयता को इसी संदर्भ में देखना चाहिए।

राष्ट्रवाद की संकल्पना भले ही राजनीतिक रही हो जिसका विकास आधुनिक औद्योगिक समाज की जरूरतों के हिसाब से हुआ हो, इसके बावजूद आम जनता में इसका स्वरूप अत्यधिक भावनिक, अतार्किक, कल्पनाशील दिखाई देता है। राष्ट्रवाद देशप्रेम के साथ इतना घुल मिल जाता है कि भारतीय परिप्रेक्ष्य में जनसाधारण देश प्रेम का पर्याय राष्ट्रवाद को मानता है। देशप्रेम जहाँ देश के प्रति आत्मीयता है, वहीं राष्ट्रवाद प्रतिनिधि मानकों का निर्धारण है। मूर्त राष्ट्र के प्रति भावनिक संवेदन 'देशप्रेम' है जबकि मूर्त राष्ट्र के मूर्त मानकों (भाषा, धर्म, संस्कृति, भूभाग) के प्रति राजनीतिक दृष्टिकोण 'राष्ट्रवाद' है। इसीलिए किसी भी देश के नागरिकों में देशप्रेम की भावना एक-सी होगी लेकिन राष्ट्रवाद संबंधी मान्यताएँ भिन्न-भिन्न, सकारात्मक, उदासीन, नकारात्मक हो सकती हैं। प्रस्तुत शोध आलेख में भारतीय राष्ट्रवाद की स्थिति को राष्ट्रवाद की संकल्पना के तत्वों, आवश्यक गुणों, मान्यताओं के परिप्रेक्ष्य में देखा जा रहा है, जिसका विश्लेषण-समीक्षा 2001 में प्रदर्शित आशुतोष गोवारीकर द्वारा निर्देशित तथा 2002 में ऑस्कर पुरस्कार 'सर्वश्रेष्ठ विदेशी फिल्म' के लिए नामांकित फिल्म 'लगान' की अनुप्रयुक्ति द्वारा किया गया है।

राष्ट्रवाद परिचयात्मक तत्व के रूप में उभरता है और यह निश्चित भूभाग में रहने वाले लोगों की आपसी पहचान तय करता है। उनके लिए एक धर्म, संस्कृति, भाषा, प्रांत, भौगोलिक प्रदेश की आवश्यकता को महसूस करता है। इस संदर्भ में सुनालीनी कुंभार लिखती हैं, 'राष्ट्रवाद एक ऐसा विश्वास है जो यह मानता है कि यदि एक समूह के सभी लोग समान इतिहास, परंपरा, भाषा और संस्कृति के आधार पर एक-दूसरे से जुड़े हुए हैं, तो उन्हें अपना एक प्रभुसत्ता संपन्न राजनीतिक समुदाय बनाना चाहिए। यह प्रभुसत्ता संपन्न राजनीतिक समुदाय ही राष्ट्र है। इसलिए, 'राष्ट्र' शब्द से तात्पर्य एक ऐसे राजनीतिक समुदाय से है, जिसके सदस्य नजदीकी रूप से एक-दूसरे से जुड़े हुए हों। साथ ही, इस राजनीतिक समुदाय के सदस्य सांस्कृतिक, भाषाई, जातीय और यहाँ तक कि नस्लीय आधार पर भी समरूप जनसंख्या के रूप में रहते हैं।'[1] किंतु भारत जैसे विशालकाय देश में बहुभाषा, बहुधर्म, बहुजाति, बहुसंस्कृति, बहुपरंपराएं, बहुप्रांत,

बहुभौगोलिक वातावरण विद्यमान है अर्थात् राष्ट्रवाद के लिए आवश्यक 'एक' की बजाय भारत में 'बहु' विद्यमान है।

'बहु' यह भारत की समस्या भी है और विशेषता भी। जब 'एक' की बात आएगी तो वह समस्या बनेगी। लेकिन जब विविधता की बात आएगी तो वह विशेषता बन जाएगी। इसी अर्थ में 'विविधता में एकता' भारतीय राष्ट्रवाद की विशेषता रही है, जो संप्रति अपना वजूद खोती-सी दिखाई दे रही है। सवाल यह भी है कि राष्ट्रवाद के लिए आवश्यक एक संस्कृति, भाषा, धर्म की जरूरत भारतीय परिप्रेक्ष्य में कैसे पूरी हो जाती है। इसका उत्तर है- प्रस्थापित वर्ग, संप्रदाय, वर्ण अपनी संस्कृति, धर्म, भाषा को राष्ट्र पर थोप देता है। अर्थात् राष्ट्रवाद जहाँ विशिष्टों की विशिष्टता का संरक्षण करता है, वहीं आम की विशेषता को विशिष्टों की विशिष्टता में समाहित करता है। भारत जैसे बहु सांस्कृतिक देश में देशीय संस्कृति के परिचायक के रूप में प्रस्थापित वर्ग, वर्ण की संस्कृति स्थान पाती है, जिसका यहाँ के बहुसंख्यक समुदाय से विशेष सरोकार नहीं है।

राष्ट्रवाद के लिए आवश्यक तत्व संस्कृति, धर्म, परंपरा, भाषा के रूप में प्रस्थापित वर्ग-वर्ण को स्थान मिलने के कारण राष्ट्रवादी आंदोलन का नेतृत्व भी उन्हीं के हाथों में चला जाता है। भारतीय राष्ट्रवाद की शुरूआत उपनिवेशवाद के विरोध में भले ही हुई हो लेकिन उसका धार्मिक, सांस्कृतिक वर्चस्व प्रस्थापित वर्ग का ही रहा है और उसका नेतृत्व भी बहुतायत प्रस्थापित वर्ग के हाथों में रहा। प्रकारांतर से सत्ता और सत्ता के उपकरणों का केंद्रीय शासक प्रभुत्वशाली प्रस्थापित वर्ग बन जाता है और आम जनता का भविष्य इस केंद्रीय शासित के न्याय बुद्धि पर निर्भर करने लगता है। इसी कारण मार्क्सवाद राष्ट्रवाद का विरोधी बन जाता है। इस बारे में हॉब्सबॉम का मानना है, 'राष्ट्रवाद पूंजीवाद के विकास का एक खास चरण है। राष्ट्रवाद प्रभावशाली वर्ग अर्थात् बुर्जुआ वर्ग को एकजुट करता है। यह बुर्जुआ वर्ग और आम जनता के बीच एक झूठी सामुदायिक भावना उत्पन्न करता है। सच्चाई यह है कि आम जनता को पूँजीवाद में दरिद्रता और शोषण का सामना करना पड़ता है।'[2]

भारतीय राष्ट्रवाद में भी सांस्कृतिक, धार्मिक एवं भाषिक धरातल पर प्रस्थापित वर्ग का वर्चस्व स्पष्ट रूप से दिखाई देता है। भारतीय राष्ट्रवाद की 'अतीत गौरवगान' की भावना प्रस्थापित वर्ग के इच्छित का प्रतिनिधित्व करता है। 'अतीत गौरवगान' का मार्गक्रमण भविष्य की बजाय भूत की ओर होता है। जिसमें प्रस्थापित वर्ग की पूर्व प्रस्थापित व्यवस्था को कायम रखने की मंशा स्पष्ट दिखाई देती है। इसमें प्रखर रूप से जो पुराना है, वह हर हाल में बेहतर है की भावना निहित होती है, जिसके विरोध को प्रस्थापित वर्ग राष्ट्रवाद से जोड़कर देखने लगता है। अर्थात् तर्क, विचार, विरोध का स्पेस खत्म कर दिया जाता है। जो अनुकूल है, उसे ही प्रासंगिक मानने की भावना बल पकड़ती है। विरोध को खत्म कर देने की या राष्ट्र विरोधी बताने की व्यवस्था को न्याय संगत ठहराने के लिए विशेष मानसिकता के झुंड तैयार किए जाते हैं, जबकि असहमति की परंपरा भारतीय संस्कृति का वैशिष्ट्य रहा है। डॉ. रामकुमार इस संदर्भ में 'नामवर सिंह' का हवाला देते हुए लिखते हैं, 'नामवर सिंह ने बहुत पहले लिखा था कि प्रासंगिक क्या वही होता है, जो हमारे विचारों का अनुमोदन करता है और आपके

अनुकूल है? जो आप से भिन्न है और हमें चुनौती देता है, वह प्रासंगिक क्यों नहीं है?'[3] लेकिन राष्ट्रवाद धीरे-धीरे तार्किकता, प्रासंगिकता और मतभिन्नता को संदेह की निगाह से देखने लगता है।

भारतीय राष्ट्रवाद के बाधक तत्वों में संस्कृति, धर्म, भाषा के साथ ही जाति सबसे बड़ा बाधक तत्व पाया जाता है। भारत के लंबे समय तक गुलाम रहने के कारणों में भी हम पाएँगे कि भारतीय परंपरागत जातीय मानसिकता विद्यमान रही है, जो जाति निर्धारित कामों से बाहर आने की सहूलियत नहीं देती। भारत में जातियों, उप जातियों के इतने खेमे हैं कि वे जनमानस को एक नहीं होने देते। सन् 1979 में गठित 'मंडल आयोग' ने सामाजिक एवं शैक्षिक पिछड़ा वर्ग (ओबीसी) की 3743 जातियों का उल्लेख किया है।'[4] इसमें एससी, एसटी, ओपन की जातियों को जोड़ा जाए तो भारत में लगभग 6000 से अधिक जातियाँ पाई जाती हैं। राष्ट्रवाद जहाँ समता और एकता की बात करता है, वहीं भारत में चार वर्णों के भीतर हजारों जाति निहित हैं, जिनके आचार, विचार, संस्कार, व्यवहार, परंपराएँ भिन्न-भिन्न हैं। ऐसी स्थिति में राष्ट्रवाद के मानक तत्वों को कैसे निश्चित किया जाए? इस संदर्भ में निम्न वक्तव्य उल्लेखनीय है, 'समाज का जातीय विखण्डन लोगों के हृदय को जोड़ नहीं पाया और इसने पूरे समाज को द्वेषपूर्ण बना दिया। ऊँच-नीच के भेदभाव ने हृदय को इतना कलुषित किया है कि समाज समवेत सुख व दुख में खड़ा नहीं हो पाता है तो राष्ट्र के लिये कैसे खड़ा होगा। भारत जैसे देश की यह सत्य कहानी है।'[5]

राष्ट्रवाद के यथार्थ और आदर्शवादी दोनों स्थितियों को भारतीय सिनेमा ने व्यक्त किया है। सिनेमा लोक शिक्षा का सर्वाधिक प्रभावशाली साधन है। वह जितना समाजोन्मुखी, यथार्थवादी होगा, उतना ही समाज को सजग, सावधान एवं अंतमुर्खी बनाता जाएगा। इसके विपरीत सिनेमा, सिनेमाकार जितना जातीय वर्चस्ववादी, राजनीतिक प्रोपेगंडा, धार्मिक उन्माद का प्रचारक बनेगा समाज उसी अनुकूल विघातक बनता जाएगा। भारतीय सिनेमा में समांतर सिनेमा ने समाज के दिशा निर्देशक एवं यथार्थ चित्रक के रूप में काम किया। 'सिनेमा भीतर सिनेमा' नामक अपने लेख में डॉ. अनंत पालीवाल लिखते हैं, ' समांतर सिनेमा ने नई ऊर्जा के साथ अर्थवान फिल्मों को जन्म दिया। यह एक आत्मसंतुष्टि के साथ कठिन आंदोलन के रूप में भी था। यह आंदोलन सिनेमा जगत में एक बड़े परिवर्तन की गुंजाइश तलाश रहा था। यह गुंजाइश विचारधारा के साथ-साथ सामाजिक दर्शन के उस पक्ष से भी जुड़ी थी, जो मसाला फिल्मों की चकाचौंध में धुंधले हो चुके थे।'[6] अर्थात समाज की वास्तविकता को फिल्म की कलात्मकता के बावजूद समांतर सिनेमा ने पूरी निष्ठा और ईमानदारी के साथ चित्रित किया।

'लगान' 2001 में प्रदर्शित फिल्म है, जो समांतर सिनेमा न भी कही जाए तो भी उसकी प्रस्तुति यथार्थपरक एवं ऐतिहासिक पृष्ठभूमि से संबद्ध है। यह वही दौर है, जहाँ से भारतीय राष्ट्रवाद विकसित हो रहा था। अंग्रेजों के शासन् काल की अर्थ-शोषक नीति से आहत सामान्य जनजीवन, उसका रोजमर्रा का संघर्ष, अभाव, सामाजिक-सांस्कृतिक विभेद, प्रखर जातीय अहमभाव आदि को 'लगान' बड़ी सूक्ष्मता से चित्रित करता है। एक भयावह समस्या से जूझता समाज या तो अपना सब कुछ खो देता है या बगावत

पर उतर आता है। इसी बात को 'लगान' दर्शाता है लेकिन यह बात ठीक उस तरीके की है जैसे पाकिस्तान के आक्रमण या क्रिकेट मैच के समय भारतीय राष्ट्रवाद जागृत हो जाता है और एकता की बातें करने लगता है। इसके अभाव में वह देश की अस्मिता त्याग राज्य, धर्म, जाति का प्रतिनिधि बन अपने ही देशीय बंधुओं को दुत्कारता दिखाई देता है।

'लगान' फिल्म लगान चुकाने में असमर्थ लोगों की भावनाओं का प्रतिनिधित्व करती है। लोगों पर हो रहे अन्याय-अत्याचार तथा अंग्रेजी जुल्मों को बयां करने वाली यह फिल्म न केवल भारतीय समाज की यथास्थिति को अभिव्यक्त करती है बल्कि भारतीय समाज के सामने एक आदर्श प्रस्तुत करती है। वह आदर्श है एकता का। भारत के बारे में सदियों से कहा जाता है कि यह देश विविधता में एकता का उदाहरण है। इसके बावजूद हम पाते हैं कि यहाँ एकता नाम मात्र दिखाई देती है। असल जिंदगी में एकता, बंधुता, भाईचारा दिखाई नहीं देता। वह जात, प्रांत, संप्रदाय, धर्म आदि कई खेमों में बँटकर रह गया है। लगान के माध्यम से हम एक ऐसी जीत से मुखातिब होते हैं जो किसी एक जाति, धर्म, संप्रदाय का प्रतिनिधित्व नहीं करती बल्कि भारतीय होने का प्रतिनिधित्व करती है। लगान से मुक्ति पाने के लिए क्रिकेट का जो मुकाबला हो रहा है, उसमें भारतीय खेमे की ओर से जिन्होंने बेहतर काम किया है, उनके नाम हम ध्यान से देखे तो भारतीय एकता का एक बेहतर उदाहरण पेश किया गया है। इस मुकाबले में बेहतर भूमिका अदा करने वाले खिलाड़ियों के नाम है- भुवन, देवा सिंह सोढ़ी, कचरा, इस्माइल, पूरन, भूरा, लाखा आदि।

भुवन भारतीय खेमे का कप्तान भी है और बेहतर खिलाड़ी भी है। अंग्रेज टीम जब बल्लेबाजी कर रही होती है, तब माहौल ऐसा होता है कि वह कितने ही रन बनाए, भारतीय टीम उन रनों का पीछा नहीं कर पाएगी। सारी टीम क्या करे, इस मायूसी में डूबी हुई है और तब कचरा की फिरकी रंग लाती है। वह हैट्रिक लेता है और अंग्रेज टीम उनके रनों के लक्ष्य से बहुत कम रनों पर सिमट जाती है। कचरा दलित पात्र है और दलितों का प्रतिनिधित्व करता है। भारतीय बल्लेबाजी का दारोमदार भुवन के साथ ही अन्य कुछ खिलाड़ियों के कंधों पर है, जो उसे निभाने का भरसक प्रयास करते हैं। भुवन बल्लेबाजी का आगाज देवा सिंह सोढ़ी के साथ करता है। दोनों की जोड़ी भारतीय जीत की नींव रखने का काम करती है। देवा सिंह सोढ़ी सिख है। देवा सिंह सोढ़ी के आउट हो जाने के बाद कोई भी भारतीय बल्लेबाज जिम्मेदारी से नहीं खेलता। अंग्रेज उन्हें उकसाने में कामयाब हो जाते हैं और वह भी बिना सोचे-समझे तैश में आ जाते हैं और अपनी विकेट गँवा देते हैं। हालात ऐसे बन जाते हैं कि करें तो क्या करें? ऐसे में बल्लेबाजी करने के लिए इस्माइल आता है। इस्माइल अच्छा बल्लेबाज है लेकिन पहली ही गेंद उसके सर पर लग जाती है। वह चोटिल हो जाता है और उसे पवेलियन वापस लौटना पड़ता है। इससे गुस्साए भारतीय बल्लेबाज फिर एक बार अपना गुस्सा गेंद पर निकालने की कोशिश करते हैं और अंग्रेजों के जाल में फँस जाते हैं। विकेट गिरते जाते हैं और भुवन उनकी ओर ताकता रह जाता है।

दूसरे दिन के खेल में भी बल्लेबाजी में विशेष सुधार नहीं होता। ईश्वर काका जो

बूढ़े भी हैं और मरीज भी हैं, वह अच्छा खेल तो लेते हैं किंतु शरीर साथ नहीं देता। अपने अच्छे प्रदर्शन के बाद वह रन आउट हो जाते हैं। हालात ऐसे हैं कि जिस लगान से बचने के लिए मुकाबला हो रहा है, अगर उसमें जीत नहीं मिली तो लगान तिगुना देना पड़ेगा। इस स्थिति में भारत के लिए मददगार साबित होता है चोटिल हुआ इस्माइल। वह अपने बेटे टिकू को रनर बनाकर फिर एक बार मैदान में हाजिर हो जाता है। इस्माइल पूरी सावधानी और जिम्मेदारी से खेलता है। इस्माइल और भुवन भारत को जीत के काफी नजदीक लाते हैं किंतु इसी वक्त अंग्रेजों की जालसाजी का शिकार होता है टिकू। वह रन के लिए दौड़ता है। अंग्रेज बॉलर बिना गेंद डाले उसे रन आउट कर देता है और इस्माइल आउट हो जाता है। इस्माइल मुसलमान है। अब भारतीय टीम की हार तकरीबन निश्चित मानी जाती है। ऐसे में फिर एक बार कचरा काम आता हैं। कचरा गेंदबाज है बल्लेबाज नहीं। इसके बावजूद वह भुवन के साथ डटा रहता है। अपने से जो भी बने वह इमानदारी से करता है। अंतिम गेंद पर छह रनों की आवश्यकता है। अंतिम गेंद पर आवश्यक रन नहीं बन पाते किंतु सौभाग्य से वह गेंद नो बॉल होती है और भुवन अंतिम गेंद पर छक्का लगाकर मैच जीत लेता है।

इस मैच का एक खास किरदार है लाला जो अंग्रेजों से मिला हुआ है। जानबूझकर गेंद छोड़ना, मिस फील्ड करना, इस बात को जाहिर करता है किंतु अपनी गलती में सुधार करते हुए वह भारतीय खेमे के साथ ईमानदारी से जुड़ जाता है। 'लगान' के इस क्रिकेट मैच को केवल एक अदद जीत की तौर पर नहीं देखना चाहिए बल्कि इस जीत के फामूर्ले पर गौर करना चाहिए। भारतीय खेमे को जीत तक पहुँचाने में जो खिलाड़ी अपनी अहम भूमिका निभाते हैं, उनमें भुवन हिंदू है, देवा सिंह सोड़ी सिख है, इस्माइल मुसलमान है, तो कचरा दलित है। सभी भारतीयों को खेल के लिए तैयार करने वाली एलिजाबेथ इसाई है अर्थात् भारत बनता है हिंदू, मुस्लिम, सिख, इसाई और दलितों से। लाखा जो हिंदू होकर भी अपने निजी स्वार्थ के लिए अंग्रेजों की मदद करने वाला है, उसका असली चेहरा सामने लाने का काम ईसाई कोच करती है। इतिहास गवाह है कि भारतीय लोगों को गुलामी में रखने के लिए इस भारतीय गद्दारी ने ही अंग्रेजों का साथ दिया और इस गुलामी के खिलाफ आवाज उठाने की पैरवी भी अंग्रेजों ने ही की है।

लगान की जीत हमें यह सोचने के लिए मजबूर कर देती है कि भारत तभी जीत सकता है या अपने उद्देश्य को हासिल कर सकता है, जब वह एक हो। उसका इस रूप में एक होना ही राष्ट्रीयता है। भारत के इन तबकों का एक होना यहीं भारत की ताकत है। यहीं भारत का वजूद है। जब यह सारे एक हो जाते हैं तब भारत मुश्किल से मुश्किल साध्य को भी हासिल कर सकता है। भारत एक था, इसीलिए वह डेढ़ सौ साल की अंग्रेजी हुकूमत को परास्त कर सका। सांप्रदायिक एकता के महत्व को समझाने के कारण ही शिवाजी महाराज तत्कालीन दुनिया के सबसे बड़े बादशाह औरंगजेब को धूल चटा सके। भारत एक होता है तब वह कारगिल में दुश्मनों को चारों खाने चित कर देता है। एक होने से, जुड़ने से भारत बनता है। इसीलिए भारतीय राष्ट्रवाद में भी विभिन्न धर्मों-संप्रदायों की एकता की बात होनी चाहिए। बंधुता, साहचर्य और अपनापन की भी बात होनी चाहिए। इसलिए डॉ. अंबेडकर कहते हैं, 'राष्ट्रवाद तभी औचित्य ग्रहण कर

सकता है, जब लोगों के बीच जाति, नस्ल या रंग का अंतर भूलकर उनमें सामाजिक-भ्रातृत्व को सर्वोच्च स्थान दिया जाए।'[7]

इसके बावजूद वर्तमान स्थिति इतिहास के इस बिंदु को नजरअंदाज करती दिखाई देती है। भारत जुड़ने से बनता है, यह तथ्य जानते हुए भी सियासी राजनीति 'राष्ट्रवाद' के नाम पर भारत की धार्मिक, सांस्कृतिक, सांप्रदायिक, जातीय मानसिकता को पैना बना रही है। बहु सांस्कृतिक, बहु धार्मिक, बहुभाषिक राष्ट्र होने के बावजूद एक धर्म विशेष को बढ़ावा देकर राष्ट्रीय भावना को आहत किया जा रहा है। लगान फिल्म की जीत हमें एक होने का संदेश देती है।

निष्कर्ष- राष्ट्रवाद बड़ी ही विस्तृत एवं विविधांगी संकल्पना है। भारतीय राष्ट्रवाद की स्थिति और भी अधिक विवादों से भरी है। भारतीय नागरिकों की प्रतिबद्धताएँ भी बहुस्तरीय दिखाई देती हैं। विविधता में एकता उसकी शक्ति है, इसे और अधिक मजबूत कर आगे बढ़ना होगा। 'अतीत गौरवगान' से आगे बढ़कर भविष्य की ओर देखना होगा। न केवल उच्च वर्गीय बल्कि समस्त भारत के बारे में सोचना होगा। केवल प्रस्थापित वर्ग के मानकों एवं अतीत गौरवगान तक सीमित होने पर अन्य वर्ग खुद को अलग-थलग महसूस करेंगे। अतः हमें डॉ. अंबेडकर के 'मैं सबसे पहले भारतीय हूँ और सबसे अंत में भी भारतीय ही हूँ' का निर्वाह कर भारतीय राष्ट्रीय चेतना को ऊर्ध्वगामी बनाना होगा।

संदर्भ :

1. राजनीति सिद्धांत एक परिचय- संपादक राजीव भार्गव, अशोक आचार्य (अनुवाद कमल नयन चौबे)- डालिंग किंडरस्ले प्रा. लि. नोएडा - पृ. 256
2. वहीं, पृ.262
3. हिंदी की साहित्यिक संस्कृति और भारतीय आधुनिकता- डॉ. राजकुमार- राजकमल प्रकाशन, नेताजी सुभाष मार्ग, दरियागंज, नई दिल्ली-110002- पृ.47
4. httPPs://hi.m.wikiPPedia.org/wiki/%E0%A4%AE%E0%A4%82%E0%A4%A1%E0%A4%B2_%E0%A4%86%E0%A4%AF%E0%A5%8B%E0%A4%97
5. httPPs://www.scotbuzz.org/2017/04/rashtreeyata-mein-badhak-tatva.html?m=1
6. बोधिसत्व बाबासाहेब टुडे- अंक जुलाई, 2022- सं. ज्ञानप्रकाश जख्मी- राज गार्डन कॉलोनी, आलमनगर, लखनऊ-226017 पृ.33
7). डॉ. अंबेडकर संपूर्ण वांग्मय-खंड 5- डॉ. अंबेडकर प्रतिष्ठान, सामाजिक न्याय और अधिकारिता मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली-110001, पृ.5
8. तद्भव- अंक अक्टूबर, 2015- सं. अखिलेश- 18/201, इंदिरा नगर लखनऊ-226016

सहा. प्राध्यापक तथा विभाग प्रमुख
हिंदी विभाग
वेणूताई चव्हाण कॉलेज, कराड,
जिला- सातारा